Research Paper IMPACT FACTOR VALUE : 5.983 | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 11 | ISSUE : 12 |DECEMBER 2025

धमण्डी राम कृत अहल्या और कवि का नारी विषयक अवबोध

DR. KUMARI AMRITA [1]

[1] GUEST FACULTY IN THE DEPARTMENT OF HINDI, SDS COLLEGE KALER ARWAL, AURANGABAD.

ABSTRACT:

-

KEYWORDS:

-

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
26th December 2025	30th December 2025

परिचय **(Introduction)**

सम्प्रति जनवादी भावना के विख्यात साहित्कार हिन्दी और मगही के सुप्रसिद्ध लेखक धमण्डी राम की साहित्य साधना की चर्चा करते हुए उनके दो प्रबन्धक काव्य 'एकलव्य' और 'अहिल्या' पाठकों के आर्कषण का विशेष केन्द्र रहा है। यो हिन्दी और मगही पद्य और गद्य को मिलाकर इनकी लगभग इक्कीस रचनाएँ प्रकाशित है। डॉ. सत्येन्द्र नारायण सिंह ने अपने शोध प्रतिबंध में इनकी सैतीस रचनाओं की चर्चा की है। इनमें से कुछ रचनाएँ प्रकाशित और अप्रकाशित है। डॉ. सिंह के अनुसार कुल मिलाकर इनकी प्रकाशित और अप्रकाशित रचनाओं को मिलाकर इनकी सैंतीस कृतियाँ हिन्दी एवं मगही साहित्य को समृद्ध करते है। इन रचानाओं के माध्यम से इनकी विल्क्षण कारयित्ती प्रतिभा का परिचय प्राप्त है।

घमण्डी रामकृत प्रकाशित रचनाओं में (1) माटी की मरम मगही शब्द चित्र संग्रह (2) सोहाग के भीख (एकाँकियो का संग्रह) (3) गीत आदमी के (छियालिस मगही गीतों का संग्रह) (4) धरती के गीत (मगही लोक गीत संग्रह) (5) युग की पुकार (6) प्रौढ शिक्षा गीत (चौबीस भोजपुरी गीतो का संग्रह) (7) जज के कठघरे में (नव साक्षर हिन्दी कहानी संग्रह) (8) जन्म दिया तो शिक्षा दो (शिक्षा के प्रति नव युवाओं को जागृज करना उत्प्रेरत गीतों का संग्रह) (9) दिल के घाव (मगही गजलों का संग्रह) (10) स्वर्ग के पंख (प्रगतीशिल हिन्दी कवियों का संग्रह) (11) कथा बत्तीसी (मगही में बत्तीस कहानीयों का संग्रह) (12) खोइंछा के चाउर (मगही में नौ ललित निबंधों का संग्रह) (13) माटी के सिंगार (मगही रेखा चित्र का संग्रह) (14) एकइसवीं सदी के भोजपुरी लोकगीत (15) एकलव्य (दलित विमर्श के मगही महाकाव्य) (16) सहमा–सहमा चाँद (जनवादी चेतना के उत्प्रेरक बासठ हिन्दी कवियों का संग्रह) (17) विश्व बाजार में आदमी (हिन्दी कविता संग्रह) (18) बाघ बन्हाएल रसरी में (मगही कविता संग्रह) (19) काश्मीर और कस्तुरी (हिन्दी कविता संग्रह) (20) गीत गाँव के (मगही लोकगीतों का संग्रह) (21) अहिल्या (नारी विमर्श से सम्बन्धित मगही महाकाव्य)

अहिल्या घमण्डी राम की प्रन्द्रहवीं काव्य कृति है। उनकी अन्य प्रकाशित रचनाएँ गद्य विद्या की है। यह पौरानिक छाया का आधार लेकर लिखा गया प्रबंध काव्य है। प्रबन्ध काव्य के अन्तर्गत निरापद रूप से इसे महाकाव्य के अंतर्गत रखा जा सकता है। आचार्य विश्वनाथ कृत साहित्य दर्पण में बतलायें गये सारे मानकों पर यह रचना खरी उतरती है। कवि ने इस महाकाव्य में प्राचीन पौराणिक युग से अबतक नारियों के शोषण और अत्याचार के विरूद्ध आवाज उठाई है। इस प्रबंध का मूल विषय ही नारी विमर्श है। कवि ने इसकी भूमिका में स्वयं लिखा है ''आज के समय में नारी विमर्श, दलित विर्मश, सम्प्रदाय विमर्श साहित्य के प्रमुख बन गेल हैं' 'एकलव्य दलित विर्मश से संबंधित कृति है।' 'अहिल्या नारी विमर्श से सम्बन्धित आज नारी अंतरिक्ष में जा रहल हे। वैश्वीकरण के दौर में तो नारी महत्वपूर्ण भूमिका महसूस कैल जा रहल हे।

अइसे तो नारी से सम्बन्धित हिन्दी मगही भोजपुरी तीनों भाषा के रचना में हम अप्पन विचार धारा व्यक्त करे के पुरजोर कोसिस कइली हे। जब हम बालमीकि रामायण पढ़ली तो अहिल्या के कहानी जान के बड़ी दुःख भेल। एक नारी वेदना के कहानी हमरा झकझोर के रख देलक वाल्मीकीय रामायण में जे वर्णण आयल है ऊ पढ़ के मन घिना जा हे। ऊपद के नारी हृदय केतना घवाहिल हो जायत, वर्णन के सीमा न रहे। एहीलेल हम नारी आक्रोस आउ विद्रोह के वर्णन पुरूष समाज के खिलाफ कएली हे।। 42

घमण्डी राम ने इतिहास और कल्पना के योग्य से अपने काव्य के अनुरूप इस महाकाव्य में कथा वस्तु का निर्माण किया। वालमीकि रामायण में समागत अहिल्या के वृत्तान्त को अपनी कल्पना के तूलिका से सजाया है और उसके माध्यम से समाज में प्रचलित नारियों के प्रति पुरूषों के अविवेकपूर्ण विकृत विचारों और व्यवाहर की भर्तसना की है। प्रजापति ब्रहमा द्वारा निर्मित सुन्दरी कन्या अहिल्या को जब उसके पालन–पोषण की चिंता हुई तो उन्होंने देवताओं और ऋषियों की एक सभा बुलाई जिसमें महर्षि गौतम भी उपस्थित रहें। विचार विमर्श के पश्चात् सर्वसम्मति से प्रजापति ब्रहमा द्वारा उस कन्या को पालन–पोषण तथा शिक्षा–दिक्षा के लिए महर्षि गौतम को वह सौंप दी गई। उन्हीं के आश्रम में उसका पालन–पोषण, शिक्षा एवं संस्कार सम्पन्न हुए। समय क्रम से वह युवावस्था को भी प्राप्त हुई इसी क्रम में महर्षि गौतम द्वारा एक यज्ञ आयोजित हुआ जिसमें इन्द्रादि देवता तथा बहुत सारे ऋषिगण उपस्थित हुए। यज्ञ के कार्मकाण्ड में उपेक्षित सामग्रीयों की व्यवस्था तथा समागत अतिथियों के स्वागतादि का दायित्व अहिल्या पर ही दी गई। जिसे अपने कुछ सहेलियों (ऋषि पुत्रियों) के साथ वह कुशलता पूर्वक सम्पन्न करती रही। अहिल्या की अतिशय सुन्दरता तथा कार्य कुशलता को देखते हुए इन्द्रादी देवता कामवासना से उत्प्रेरित होकर अहिल्या के प्रति आर्कषित होने लेगे। उनके इस अनैतिक आचरण को देख वन वालाओं के साथ अहिल्या ने उनका भर्त्सना का पूर्ण विरोध किया। यहाँ कवि के पुरूषों के कामशोषण के प्रति नारियों के घृणाष्द संवेग का संदेश दिया है।

फूल लहू भर आयल गोद धरा बिछा के करियाएल भारी।
ताल नदी उपलालयल आग भरायल तेल बिना लहकारी
सूरज ताप बढ़ावल रेत किनार नदी उफनायल आरी
चान चले मुँह ढाँप लुकायल कहाँ छिन जाय न बात बुझारी

नारियों के प्रति पुरूषों की वासनात्मक संकीर्ण दृष्टि का परिचय कवि की इन प्रंक्तियों में मिलती है :

आँख लजाय न मारत टेढ़ गुलेल चलावत केंचुल नारी।
दूध जमावन रीठल नादहिं घीव चमोरल बोरल नारी।
पीठ लदायल धारा नदी वहुतायत हीरन मोतिन नारी।
रेशम रंग लुभाय बनावल मांख लदायल गेठर नारी।

इन्द्र द्वारा अहिल्या के साथ जिस प्रबंचना और दुष्कर्म की घटना अत्यंत घृणाटापद और निन्दनीय है। पुरूष की ऐसी कातिल प्रवृति और नारियों को विविध रूप से मारा जाना पुरूष प्रधनि समाज के माथे बहुत बड़ा कलंक है जो समाज और राष्ट्र की प्रगति में घातक है। कवि कहता है :

नारी के नम समुझे दासी। लड़की मात खिलावे बासी।
लड़की जान कोर्ख में मारी। फाटल पेन्हावे सारी।
सौसत देत मुअवे घाटी। देवन के हम बलि के पाटी।।
जुती पात्रव समुझे पाया। ढोल बजा के बजवे साठा।।
लैते जनम झुक जाय माया। फंस जाय धरती धरम साथा।
छाती दूध में मिलावा। सउरी में सब नून चटावा।।
अरपताल डाक्टर मिल मारे। तेल छिड़क के जियते जारे।।
झगरी छाफडीत्र जियत ढूसा। आँख नाक में कोंचत भूसा।।

वर्त्तमान परिवेश में नारी कहीं भी सुरक्षित नहीं है। वह पुरूषों की जधन्य वासनात्मक प्रवृति से सदैव डरी रहती है। चलते यौन शोषण, बालत्कार, गैंग रेप आदि की घटनाएँ उनके साथ अक्सर घटा करती है। फलतः नारियाँ सदैव घर में ही अपने को सुरक्षित पाती है। बाहर निकलने से परहेज ही करती है। किन्तु वर्तमान संदर्भ में तो वे घर से भी पूरी सुरक्षित नहीं है। प्रायः घर में घुसकर भी नके साथ बालत्कार, मारपीट और हत्याओं की घटना घटती रहती है।

घमण्डी राम की अहिल्या को घोर पश्चातान है कि वह आरण्यक संस्कृति में पली ग्राम्य नारी है। वह पढ़ी–लिखी (नागरीक सभ्यता की) नारी नहीं है। पढ़ी लिखी नारियों से कभी पुरूष वादी समाज की कृटिसत मनोवाँछा पूरी नहीं होती। घमण्डी राम के शब्दो में।

अप्पन गति से नदी नित राह चलश्त पाये
सूसर्य के प्रकाश से घरा जगमग है जाये
फैले सतरंगिनी इन्द्रधनुष मान माये
नील नभ के तारा आभूषणहि बन जाये
राद्ध में आवे जे सेड़ा, झट फेंक दो घोकर के।
अहे सिरिस्ट के लाभ रंग, न बात करे मोश्र से

घमण्डी राम ने नारी जीवन को अनेक समस्याओं जैसे भ्रुण हत्या, नवजात शिशु का त्याग, उनकी अशिक्षा, मौलिक अधिकारों से उन्हें बैचित रखा जाना, मुनवादी मालता के अनुसार उन्हें पिता, पति तथा बुढ़ापें में पुछा के अधीन रहने को विवश करना, सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक दृष्टि से उनकी अवहेलना, हत्या बलात्कार और अपमान भारी जिन्दगी आदि की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया है। प्रायः हमारे समाज में नारियाँ निर्दोष होकर भी सजा भोगने का विवश है। अहिल्या इसका श्रेष्ठ उदाहरण है। जब वह बाल्यावस्था पार कर किशोरवस्था में पहुँचती है तो वह पिता के यज्ञ में आहूत देवराज इन्द्र और अन्य देवताओं की कुद्वष्टि का शिकार होती है। वह उस समय किसी तरह अपने को बचा पाती है किन्तु इन्द्र की मुक दुर्भावना एक घात के रूप उनके जीवन को नष्ट करके ही छोड़ती है। शील और सौन्दर्य का योग उसके लिए घातक होता है। यज्ञ के पश्चात् उसके पालक पिता महर्षि गौतम जब प्रजापति ब्रहमा के पास जाकर अहिल्या के लिए योग्य वर की खोज कर उसके विवाह के लिए अनुरोध करते है तो देवताओं की सम्पति पूर्वक से महर्षि गौतम की ही पत्नी के रूप में उसे स्वीकार करने का अदेश देते है। बेमेल विवाह का उदाहरण इससे निकृष्ट नहीं हो सकता एक युवती अपने पिता की ही पत्नी योगय बन जाये तो उस पति से वह दामपत्य प्रेम की अपेक्षा तो कभी नहीं कर सकती। किन्तु अहिल्या को वह अभिशाप भी झेलना पड़ता है। विचारणीय है कि पिता के समक्ष अपने को पत्नी के रूप में प्रस्तुत करना किसी कन्या के लिए कितना असमंजस की स्थिति हो सकती है। कोई उसे मन से स्वीकार नहीं कर सकती किन्तु सम्पति इस दहेज लोलुप समाज में असंख्य बालिकाओं को अपने पिता के हम उम्रे पति का सामना करना पड़ता है। फिर भी अहिल्या प्रतिव्रता है और वह गौतम के अतिरिक्त किसी के पुरूषत्व को स्वप्न में भी नहीं देखती। कामलिप्सा से पीड़ित इन्द्र अपने वास्तविक रूप में नहीं महर्षि गौतम के रूप में आतें है। इस स्थिति में उनके काम प्रस्ताव को वह गौतम के काम प्रस्ताव समझकर स्वीकार करती है। यह उसका धर्म भी है और नैतिक दायित्व भी। चुंकि वह प्रतिब्द्धता नारी है। पति के प्रस्ताव के वह इन्कर नहीं कर सकती है। उसने सर्वथा गौतम के साथ सहयोग किया है। अगर वह इन्द्र द्वारा प्रबंधित होती है तो इसमें वह कतई दोषी नहीं है। गंगा स्नान के लौटने के पश्चात् जब योगद्वष्टि से महर्षि गौतम सारी घटना को जान लेते है और इन्द्र को सहस्रलिंगी होने का शाप देते है यह तो सर्वथा उचित है। मेरी दृष्टि में अगर वे उन्हें भस्म कर डालते तो अनुचित नहीं कहा जा सकता। वैसे बलात्कारियों और प्रबंधकों के लिए तो मृत्युदण्ड ही उचित है। किन्तु निर्दोष अहिल्या को पत्थर शिला बन जाने का शाप तो उनकी तपोवन और पुरूषात्व के अभिमान तथा अविवेक है द्योतक है जिसे उस निर्दोष नारी को वर्षो तक झेलना पड़ता है।

महर्षि विश्वामित्र के नीरक्षीर विवेकपूर्ण न्यायबुद्धि के फल स्वरूप अहिल्या का उद्धार होता है उनेकी फटकार सुन महर्षि गौतम को पुनः अहिल्या को स्वीकार करना पड़ता है किन्तु वर्त्तमान समाज में गौतम जैसे अविवेकी तो असंख्य महर्षि विश्वामित्र जैसे न्यायप्रिय और भगवान राम जैसे कौतिधारी और कृपालु सज्जनो का तो नितांत अभाव ही है। आज भी असंख्या अहिल्या पुरूषों, विशेषकर उच्चाधिकारियों अथवा तथा कथित बड़े लोगों की कुटिसत मनोवृत्तियों का शिकार हो रही हैं किन्तु व्यवस्था उन्हें व्यायपूर्ण अधिकार दिलाने में सर्वया असमर्थ है।

कविवर घमण्डी राम ने अहिल्या के माध्यम से पुरूष प्रताड़ना के शिकार नारियों की पुरूष विरोधी भावना को इन पंक्तियों में उजागर किया है

नारी नरक दुआर कहावे काहे नरक दिग आय जी
नर के नजर हइ पातक भर कउल बचो के उपाय जी
पातक घर भगवान पधारो अब कउत लोक लुकाय जी
रूप नारायण नर के घरली भगवान नामों हँसाय जी
नर के रूप कसाई जनली नरहिं काहे बन जाय जी
इन्द्र रूप देखौलन नर के संगरों नरक बन जाय जी
ओहि नर के रूप अपने के हिरदा देख अफसाय जी
नारी के सब दुरगत सहली याद कर देह कंणाय जी
जेकर यरजगज हम भेली दागंल छ्ड को घिषाय जी
नाम बहुत हम सुनली रघुवर नर रूप देख घिनाय जी
प्रभु अवतार कउन फल मोरा लब कुछ गेलक लुटाय जी
पुरूष नीयत में खोट बसाय नर रूप इन्द्र बनाय जी
नर कृतज्ञ के आशु कवहुँ घातक बन जाय जी
युग युग बीतल रहइत रहवाँ कबहुँ तय पुरूष दिखाय जी।

अहिल्या द्वारा उपर्युक्त पंक्तियों में अभिव्यक पुरूष जाति के प्रति आक्रोस के माध्यम से कवि ने वर्तमान सामाजिक व्यवस्था (पुरूष प्रधान समाज) पर कटु व्यंग्य किया है। आज तथा कथित बड़े–बड़े नेता, अधिकारी इत्यादि लोग नारी को पुरूष की समानता दिलाने की बात तो करते है किन्तु व्यवहार में वे उनके प्रति कातिल ही सिद्ध होते है। प्रायः किसी दुष्कर्म के बाद पुरूष दूषित नहीं होते और उन्हें अधिकर से वंचित और समाज से वहिष्कृत नहीं किया जाता किन्तु अगर नारी बल पूर्वक या छल पूर्वक भी किसी दुष्कर्म का शिकार हो जाती है तो उसका पूरा जीवन अभिशत और फलेकित है फिर भी पुरूष उन्हें सहयोगी अथवा सहचारीन मात कर भोग्य और दासी के रूप में उसके साथ व्यवहार करते है। कविवर घमण्डी राम ने 'अहिल्या' की भूमिका में स्पष्ट है ई काव्य लिये के हमर प्रयोजन नारी शोषण के विरूद्ध बुलंद आवाज दिखलारा हो हमर विचार से लगत है कि प्राचीन काल में पुरूष समज के वर्चस्व के कारण नारी के जो शोषण होयल हे। धर्म ओट में नारी के योग्य बना देवल गेल हे। एक ओर नारी के अर्द्धगिनी मान लगेल हे। लक्ष्मी सरस्वती दुर्गा के रूप मं उनकर पूजा देखवल गेल हे। य़ नार्यस्तु पूज्यन्ते समन्ते देवता कहलगेलज है इस तरफ नारी के साथ जे आचरण व्यवहार देखे में अवाइ 0हे उबड़ा असहनीय आउ निन्दनीय है।

इस प्रकार पूरे महाकव्य में नारी शोषण एवं उत्पीड़त के विरूद्ध आवज उठाते हुए उनके उद्धार और सशिक्तकरण हेतु आवाज बुलन्द की गयी है। कवि ने इतिहास से अधिक कल्पना का सहारा लिया तथा ऐतिहास और पौराणिक कथा संदर्भ की व्यख्या वर्तमान आधुनिक परिवेश के नजरिए की है। वर्तमान जीवन संदर्भ को देखते हुए कहना सभीचीन होगा कि वर्तमतान समय में इस विद्रोह और अभियान अधिक प्रासंगिक हो गया है ता कि नारियों को भी जीवन के हर क्षेत्र में पुरूषों के समान ही अधिकरी और सम्मान मिल सके। फक्र की बात है कि भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् विगत कुछ दशकों से समाज और राजनीतक व्यवस्था में यह जागरूकता आयी है।

REFERENCES